''बाइबल मसीह की कलीसिया के बारे में क्या कहती है?''

I. मसीह की कलीसिया किनसे बनती है ?

1. शाऊल ने _____ को सताया। प्रेरितों 8:3
2. यह सताया जाना _____ के लिए था। प्रेरितों 9:1
3. इन्हें _____ भी कहा जाता था। प्रेरितों 11:26
4. कलीसिया को _____ के रूप में भी जाना जाता है। इफि. 1:22, 23

II. कितनी देहें हैं ?

_____ रोमियों 12:4, 5
_____ 1 कुरिन्थियों 12:12
_____ 1 कुरिन्थियों 12:20
_____ इफिसियों 4:4
_____ कुलुस्सियों 3:15

III. यह किसकी कलीसिया (देह) है ?

_____ मत्ती 16:18
_____1 कुरिन्थियों 12:27
_____ इफिसियों 1:22, 23
_____ इफिसियों 5:30
_____ कुलुस्सियों 1:24

IV. मसीह कलीसिया का क्या है ?

_____ मत्ती 16:18
_____ 1 कुरिन्थियों 3:11
_____ इफिसियों 1:22
_____ इफिसियों 5:23

V. मसीह ने कलीसिया के लिए क्या किया है ?

_____ क्यों ? _____ इफिसियों 5:25
_____ प्रेरितों 20:28

VI. कलीसिया _____ के अधीन है। इफिसियों 5:24

VII. सदस्यों में मसीह किस प्रकार की एकता रखता है ?

1. कि वे _____ हों, जैसे हम _____ हैं। यूहन्ना 17:22
2. कि तुम सब _____ ही बात कहो; और तुम में _____ न हो। 1 कुरिन्थियों 1:10
3. _____ ही आत्मा में स्थिर, और _____ होकर रहो। फिलिप्पियों 1:27

VIII. यीशु ने अपने आपको कलीसिया के लिए दे दिया ताकि वचन के द्वारा जल के स्नान से _____ करके _____। इफिसियों 5:26, 27

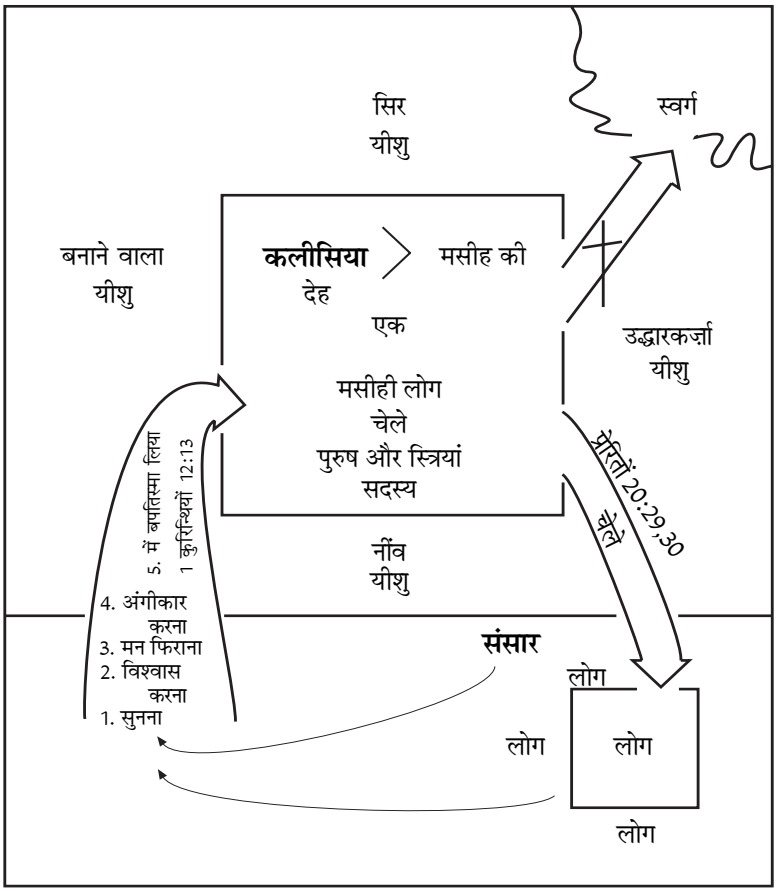

अध्ययन शीट प्रस्तुत करना:

''बाइबल मसीह की कलीसिया के बारे में ज़्या कहती है?''

तर्कसंगत रूप से ''बाइबल मसीह की कलीसिया के बारे में ज़्या कहती है?'' की अध्ययन शीट को ''मार्ग यीशु है'' या ''उद्धार'' की अध्ययन शीटों में से किसी के बाद भी प्रस्तुत किया जा सकता है। इस शीट को प्रस्तुत करने का शायद सबसे अच्छा समय ''उद्धार'' की अध्ययन शीट के बाद है। इसका कारण यह है कि यह वहीं से आरज़्भ होती है जहां ''उद्धार'' की अध्ययन शीट समाप्त होती है।

उद्देश्य

''कलीसिया'' की शीट का उद्देश्य यह समझाना है कि उद्धार पाए हुए लोग एक देह अर्थात मसीह की कलीसिया में हैं, जो किसी मनुष्य की बनाई हुई संस्था, संगठन या साज़्प्रदायिक कलीसिया *नहीं* है। मसीह की एक देह में आने वाले सब लोगों को उस एक देह की एकता के लिए काम करना चाहिए।

संक्षेप में पाठ

इस अध्ययन शीट से पता चलता है कि मसीह के अनुयायी अर्थात मसीही लोग कलीसिया अर्थात मसीह की देह हैं। यीशु ने केवल एक ही देह बनाई, जो कि वह कलीसिया है जिसका वह सिर, नींव और उद्धारकर्ज़ा है। अपने प्रेम के कारण ही वह मरा ताकि अपने लहू से कलीसिया को खरीदकर अपने लिए तैयार कर सके। वह चाहता है कि जितने लोग उसकी कलीसिया में हैं, सब एक हों।

परिचय

इस पाठ का परिचय संक्षेप में ''उद्धार'' की अध्ययन शीट की समीक्षा करके फिर उन लोगों की ओर ध्यान दिलाकर किया जा सकता है जो उद्धार पाए हुए अर्थात कलीसिया में

हैं। अध्ययन शीट ''उद्धार'' में बताया गया है कि उद्धार पाने के लिए ज़्या किया जाता है और यीशु की देह के लोगों का सदस्य कैसे बना जाता है। इस पाठ से यह जानने में सहायता मिल सकती है कि बाइबल मसीह की कलीसिया के बारे में ज़्या कहती है।

I. कलीसिया के सदस्य

इस भाग में हम मसीह की कलीसिया के सदस्यों का अध्ययन करेंगे, वे कौन हैं और उन्हें ज़्या कहा जाता है।

1. मसीह की कलीसिया किन लोगों से बनती है? [पढ़ें प्रेरितों 8:3] शाऊल ने *किसे* सताया? [रिज़्त स्थान में ''कलीसिया'' भरें।] ध्यान दें कि जब शाऊल कलीसिया (अर्थात चर्च) को सताने की खोज में था, तो वह किसी इमारत या भवन को नहीं गिरा रहा था। मसीह की कलीसिया अर्थात चर्च ऑफ़ क्राइस्ट कोई भवन या इमारत, या ऐसा संगठन *नहीं* है जिसमें विशेष रूप से पुरोहित नियुज़्त किए जाते हों। बल्कि कलीसिया तो उन पुरुषों और स्त्रियों के समूह का नाम है जिनका सज़्बन्ध यीशु से है। [*पिछली ओर* एक वर्ग बनाएं, और वर्ग में सबसे ऊपर ''कलीसिया'' लिखें। नीचे ''सदस्य'' लिखें। उसके ऊपर ''पुरुष व महिलाएं'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

2. जब शाऊल कलीसिया को नाश करने की तलाश में था, तो वह किसे नाश करना चाहता था? ध्यान दें कि प्रेरितों 8:3 तक लूका शाऊल की गतिविधियों पर और फिर फिलिप्पुस की गतिविधियों पर चर्चा करने लगता है (प्रेरितों 8:5)। प्रेरितों 9:1 में वह फिर से वहीं से आरज़्भ करके जहां से उसने शाऊल की चर्चा छोड़ी थी, उसकी गतिविधियों पर चर्चा करने लगता है। प्रेरितों 8:3 में जब उसने शाऊल के बारे में लिखना बन्द कर दिया था, तो शाऊल कलीसिया को उजाड़ना चाहता था। जब दोबारा लूका ने शाऊल की कहानी शुरू की तो शाऊल अभी भी वही कर रहा था। शाऊल अभी भी किसका विनाश चाहता था? [प्रेरितों 9:1 पढ़ें।] कलीसिया के सदस्यों को *ज़्या* कहा गया है? [रिज़्त स्थान में ''प्रभु के चेलों'' भरें। *पिछली ओर* ''पुरुष और महिलाएं'' के ऊपर ''चेले'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

[सिखाने वाला यहां पर *चेले* और *प्रेरित* में अन्तर को समझा सकता है। इसका कारण यह है कि बहुत से लोग सोचते हैं कि चेले बारह ही थे। लूका 6:12-14 यह समझाने में सहायता करता है कि *बारह प्रेरित* यीशु के अनुयायियों अर्थात उसके चेलों के बहुत बड़े समूह में से चुने हुए लोगों को कहा जाता है। *प्रेरितों* का समूह छोटा था अर्थात वे बारह थे जिन्हें उसके विशेष प्रतिनिधियों के रूप में चुना गया था, और *चेले* उसके *सभी* अनुयायियों को कहा जाता था।]

3. कलीसिया के सदस्यों को प्रभु के *चेले* कहा जाता था, तो चेलों को ज़्या कहा जाता था? [पढ़ें प्रेरितों 11:26] चेलों को अर्थात कलीसिया के सदस्यों को और *ज़्या* कहा जाता था? [रिज़्त स्थान में ''मसीही'' भरें। *पिछली ओर* ''चेले'' के ऊपर ''मसीही'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

4. ''चेले'' और ''मसीही'' दोनों शज़्द कलीसिया के सदस्यों के लिए ही इस्तेमाल

किए गए हैं। एक समूह के रूप में अर्थात पूर्ण रूप से इन सदस्यों को कलीसिया कहा जाता है। लोगों के इस समूह का वर्णन करने के लिए एक और शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। [पढ़ें इफिसियों 1:22, 23] कलीसिया को और *किस* नाम से पुकारा जाता था? [रिक्त स्थान में ''देह'' भरें। *पिछली ओर* वर्ग में ''कलीसिया'' के नीचे ''देह'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।] यदि कलीसिया देह है और देह कलीसिया, तो जो कुछ कलीसिया के लिए सत्य है वही देह के लिए भी सत्य है, और जो कुछ देह के लिए कहा जाता था वही कलीसिया के लिए भी कहा जा सकता है।

हमने इस भाग में क्या सीखा? हमने सीखा कि ''कलीसिया'' और ''देह'' का इस्तेमाल मसीह के अनुयायियों के एक समूह के लिए किया जाता है। ''चेले'' और ''मसीही'' शब्दों का इस्तेमाल निजी सदस्यों के लिए किया जाता है। मसीही लोगों से ही मसीह की देह (अर्थात कलीसिया) बनती है।

II. कितनी?

क्या बाइबल यह सिखाती है कि मसीही लोगों ने बहुत से धार्मिक संगठन बना लिए हैं? मसीही लोग कितने गुटों के सदस्य थे? [रोमियों 12:4, 5 पढ़ें।] मसीही लोग *कितनी* देहों के अंग थे? [रिक्त स्थान में ''एक'' भरें।] ध्यान दें कि बाइबल कहती है कि मसीह में ''एक'' ही देह है। ''उद्धार'' अध्ययन शीट में हमने सीखा था कि ''सब प्रकार की आत्मिक आशिषें'' मसीह में हैं। क्योंकि यह सत्य है, इसलिए इसका अर्थ यह है कि *एक देह* में ही वे सभी आशिषें हैं जो मसीह में मिलती हैं। जो कुछ *देह* के लिए सत्य है वही *कलीसिया* के बारे में भी सत्य है। इसलिए इसका अर्थ यह है कि मसीह में मिलने वाली सभी आत्मिक आशिषें उस *एक* कलीसिया में हैं।

बाइबल में देह का उल्लेख कई बार आता है। क्या बाइबल देहों की गिनती के विषय में एकजुट है? [1 कुरिन्थियों 12:12, 20; इफिसियों 4:4; कुलुस्सियों 3:15 पढ़ें।] *कितनी* देहें हैं [रिक्त स्थान में ''एक'' भरें।] क्या बाइबल इस बात से सहमत है? क्या यह इस तथ्य पर ज़ोर नहीं देती कि केवल एक ही देह है? [*पिछली ओर* वर्ग में ''एक'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

हमने इस भाग में क्या सीखा है? हमने सीखा है कि वास्तविक देह केवल *एक* ही है अर्थात एक ही सच्ची कलीसिया है जिसका बाइबल में भी उल्लेख है।

III. किसकी कलीसिया?

इस भाग में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि मसीही लोगों की यह देह अर्थात कलीसिया किसकी है।

यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि वह एक कलीसिया बनाएगा। वह किसकी कलीसिया बनाने वाला था? [मत्ती 16:18 पढ़ें।] यीशु ने *किसकी* कलीसिया बनाने के लिए कहा? [रिक्त स्थान में ''अपनी'' भरें और बाद में कोष्ठकों में ''मसीह की'' लिखें।]

बाद में पौलुस ने इस देह अर्थात कलीसिया को सज़्बोधित किया था। पौलुस ने इसे कैसे सज़्बोधित किया? [1 कुरिन्थियों 12:27 पढ़ें।] पौलुस ने इसे *किसकी* देह कहा? [रिज़्त स्थान में ''मसीह की'' भरें]।

पौलुस ने इसी अर्थ में देह को और ज़्या कहा। वह इस देह को किसकी देह कहता है? [इफिसियों 1:22, 23; 5:30; कुलुस्सियों 1:24 पढ़ें।] पौलुस *किसकी* देह को एक देह कहता है? [रिज़्त स्थानों में कोष्ठकों में ''मसीह की'' के बाद ''उसकी'' लिखें। *पिछली ओर* ''मसीह की'' के बाद ''कलीसिया'' और ''देह'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

इस भाग से हमने ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि यीशु की केवल एक ही देह है अर्थात उसकी एक ही कलीसिया है। यह देह सभी मसीहियों से बनती है।

[सिखाने वाला यहां पर अध्ययन शीट की ओर मुड़कर पूछे कि कोई उसकी एक कलीसिया अर्थात एक देह में कैसे प्रवेश करता है। *पिछली ओर* ''संसार'' से ''कलीसिया'' में एक तीर खीचें। देखें पृष्ठ 146।] कलीसिया में कोई कैसे शामिल होता है? ''उद्धार'' में हमने ज़्या सीखा था कि मसीह में कैसे कोई आता है? यीशु ने सिखाया कि सुनकर मानना, उसमें विश्वास करना, अपने पापों से मन फिराना और उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है। यदि हम ऐसा करते हैं और बाइबल के अनुसार बताया गया बपतिस्मा लेते हैं तो हम यीशु में आते हैं (गलातियों 3:27)। यीशु की केवल एक ही देह है। इसके लिए स्पष्ट है कि जब हम यीशु में बपतिस्मा लेते हैं, तो हम यीशु की उस देह अर्थात कलीसिया में आ जाते हैं। परन्तु यह निष्कर्ष निकालने के लिए कि उस एक देह में हम कैसे आते हैं हमें अनुमान की आवश्यकता नहीं है। बाइबल बताती है कि उस एक देह में हम कब आते हैं। [1 कुरिन्थियों 12:13 पढ़ें।] उस एक देह में हम कब आते हैं? [*पिछली ओर* तीर में वे बातें लिखें जो हमें उस एक देह में लाती हैं। देखें पृष्ठ 146।]

यदि हम उस एक देह में हैं तो हमें ज़्या कहा जाता है? एक समूह के रूप में हमें एक *देह* अर्थात मसीह की *कलीसिया* कहा जाता है। व्यज़्तिगत तौर पर हमें प्रभु के *चेले* अर्थात *मसीही* कहा जाता है।

IV. मसीह और कलीसिया

कलीसिया से यीशु का अटूट सज़्बन्ध है। कोई दूसरा ऐसा सज़्बन्ध नहीं बनाए रख सकता।

कलीसिया पृथ्वी पर सदा से नहीं है, सो यह अवश्य ही किसी समय आरज़्भ हुई थी, और इसे किसी ने आरज़्भ किया था। यीशु ने ज़्या करने के लिए कहा था? [पढ़ें मज़ी 16:18] यदि कोई व्यज़्ति किसी चीज़ को बनाता है, तो वह उसका ज़्या होता है? ज़्या वह उसका बनाने वाला नहीं होता? यीशु कलीसिया का *ज़्या* है? [रिज़्त स्थान में ''बनाने वाला'' भरें। *पिछली ओर* वर्ग के बाईं ओर ''बनाने वाला'' लिखें और उसके नीचे ''यीशु'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

यीशु केवल कलीसिया को बनाने वाला ही नहीं बल्कि कुछ और भी है। कलीसिया

किस पर बनी है ? [1 कुरिन्थियों 3:11 पढ़ें।] यीशु कलीसिया का और *ज़्या* है ? [रिज़्त स्थान में ''नींव'' भरें।] यदि यीशु ने कलीसिया अपने ऊपर ही बनाई है, तो ज़्या हमारे लिए किसी और पर अर्थात यीशु के अलावा किसी और नींव पर बनाना उचित है ? [*पीछे* वर्ग के नीचे ''नींव'' और उसके नीचे ''यीशु'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

यीशु कलीसिया के लिए कुछ और भी है। वह कलीसिया के लिए और ज़्या है ? [इफिसियों 1:22 पढ़ें।] यीशु कलीसिया का *ज़्या* है ? [रिज़्त स्थान में ''सिर'' भरें।] किसी संगठन की देह (बॉडी) के *सिर* का ज़्या काम होता है ? ज़्या सिर का काम संगठन की अगुआई करना और निर्देश देना नहीं होता ? कलीसिया का सिर मनुष्य या लोगों का समूह नहीं हो सकता। बाइबल में जिस कलीसिया का उल्लेख है उसका सिर केवल और केवल यीशु ही है। [*पिछली ओर* वर्ग पर ''सिर'' और उसके नीचे ''यीशु'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

यीशु कलीसिया का कुछ और भी है। वह कलीसिया का और ज़्या है ? [इफिसियों 5:23 पढ़ें।] यीशु कलीसिया का *ज़्या* है [रिज़्त स्थान में ''उद्धारकर्ज़ा'' भरें।] जो लोग यीशु की कलीसिया अर्थात उस कलीसिया में हैं जिसे उसने स्वयं बनाया है और जिसका वह सिर है, उनका उद्धारकर्ज़ा स्वयं यीशु है। [*पिछली ओर* वर्ग से स्वर्ग की ओर एक तीर बनाएं और तीर में एक क्रूस। क्रूस के नीचे ''उद्धारकर्ज़ा'' लिखें और उसके नीचे ''यीशु'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है ? हमने सीखा है कि यीशु कलीसिया का बनाने वाला, नींव, सिर और उद्धारकर्ज़ा है। कलीसिया से यीशु के इतने सज़्बन्धों के कारण, लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे कलीसिया के साथ उसके सज़्बन्ध के कारण उसे सज़्मान दें और कलीसिया से उसके सज़्बन्ध को न तोड़ें। लोगों को दूसरी कलीसियाएं नहीं बनानी चाहिए, दूसरी नीवों पर रद्दा रखने का प्रयास नहीं करना चाहिए, दूसरे के सिर होने की बात नहीं माननी चाहिए, और दूसरे उद्धारकर्ज़ा नहीं ढूंढ़ने चाहिए। यीशु कलीसिया की हर आवश्यकता को पूरा करता है (कुलुस्सियों 2:10)।

V. कलीसिया के लिए यीशु की मृत्यु

यीशु कलीसिया का बनाने वाला, नींव, सिर और उद्धारकर्ज़ा तो है, परन्तु उसने कलीसिया के लिए ज़्या किया है और ज़्यों किया ? [इफिसियों 5:25 पढ़ें।] यीशु ने कलीसिया के लिए *ज़्या* और *ज़्यों* दिया ? [रिज़्त स्थान में ''इसके लिए अपना आप दे दिया'' और ''प्रेम'' भरें।] इसे दूसरे ढंग से भी व्यज़्त किया जाता है [प्रेरितों 20:28 पढ़ें।] यीशु ने कलीसिया को *ज़्या* देकर खरीदा ? [रिज़्त स्थान में ''अपने ही लहू से खरीदा'' भरें।]

[सिखाने वाला यहां पर *पिछली ओर* प्रेरितों 20:28 और निज़्न प्रश्न लिख सकता है:

1. कलीसिया को किसने खरीदा ?
2. कलीसिया किसकी है ?
3. कलीसिया उसकी ज़्यों है ?
4. उसने इसे ज़्या देकर खरीदा ?
5. हमें कलीसिया को ज़्या कहकर पुकारना चाहिए ?

6. कलीसिया का सम्भावित मूल्य ज़्या लगाया गया था?
7. यीशु कलीसिया का ज़्या दाम देने को तैयार था?
8. ज़्या कलीसिया यीशु के लिए मूल्यवान है?
9. यीशु के लहू का लाभ लेने के लिए हमें कहां होना चाहिए?
10. यीशु स्वर्ग में अपने साथ किसको ले जाएगा?

इन प्रश्नों को लिखने के बाद, सिखाने वाला प्रेरितों 20:28 से सीखने वालों को इन प्रश्नों का उज़र देने में सहायता करे। इनके उज़र स्पष्ट हैं और इस प्रकार होंगे: 1.यीशु ने; 2. यीशु की; 3. उसने इसे खरीदा है; 4. अपना लहू; 5. उसकी (अर्थात मसीह की) कलीसिया; 6. यीशु का लहू; 7. अपना लहू; 8. हां; 9. उसकी कलीसिया में; 10. अपनी कलीसिया को।

प्रश्न 10 को समझाने के लिए, शिक्षक को चाहिए कि किसी ऐसे व्यज़्ति के बारे में बताए जो दुकान से एक बैग खरीदता है और कुछ और सामान लेने के लिए दुकान के एक कमरे में चला जाता है। परन्तु वापस आने पर उसके बैग के पास कमरे में और भी कई बैग पड़े होते हैं। वह अपने घर कौन सा बैग ले जाएगा? वह उसी बैग को लेकर जाएगा जिसे उसने खरीदा था। यदि वह कोई दूसरा बैग ले ले, तो वह उस बैग को ले जाएगा जो उसका नहीं था। इसी प्रकार से लगता है कि यीशु केवल उन्हें ही स्वर्ग में ले जाएगा जिन्हें उसने खरीदा है। यदि वह उन्हें स्वर्ग में ले जाए जिन्हें उसने अपने लहू से नहीं खरीदा तो वह क्रूस पर अपने लहू के बहाने की अनिवार्यता को व्यर्थ कर देगा; ज़्योंकि यदि वह उन्हें स्वर्ग में ले जा सकता है जिन्हें उसने अपने लहू से नहीं खरीदा तो स्वर्ग में उनके प्रवेश के लिए उसके लहू बहाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। कलीसिया उसके लहू से खरीदे हुए लोग ही हैं; इसलिए स्वर्ग में कलीसिया के लोग ही जाने चाहिए। ज़्या आप उसकी कलीसिया में हैं?]

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि अपने प्रेम के कारण यीशु ने कलीसिया के लिए अपना लहू बहाया। यदि हम यीशु के लहू से मिलने वाले लाभ पाना चाहते हैं तो हमें उसकी कलीसिया में होना आवश्यक है।

VI. अधीन रहने वाली कलीसिया

यीशु द्वारा बनाई गई कलीसिया किसकी बात मानती है? ज़्या उसकी कलीसिया धार्मिक निर्देशों, विधियों और मनुष्य की बनाई परज़्पराओं को मानती है? [इफिसियों 5:24 पढ़ें।] कलीसिया *किसके* अधीन है? [रिज़्त स्थान में ''मसीह'' भरें।]

यदि यीशु कलीसिया का सिर है, और कलीसिया उसके अधीन है तो ज़्या कलीसियाओं के लिए अपने नियम और विधियां बनाना उचित है? मसीह की कलीसिया के लोगों को चाहिए कि वे हर बात में उसकी आज्ञा मानें। जो उसकी नहीं सुनेंगे उन्हें उसके लोगों में से नाश किया जाएगा (प्रेरितों 3:23)।

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि कलीसिया, अर्थात मसीह की देह मसीह की इच्छा को पूरा करती है।

VII. एकता

1. हमने पहले ही सीखा है कि यीशु की केवल एक ही देह अर्थात कलीसिया है। यीशु इस देह के सदस्यों के एक दूसरे के साथ कैसे सम्बन्ध चाहता है ? ज़्या वह चाहता है कि वे एक दूसरे से दूर-दूर या मिलकर रहें ? [यूहन्ना 17:22 पढ़ें।] यीशु और पिता एक दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं। ज़्या यीशु चाहता है कि उसके अनुयायी नमूना लेकर उनका अनुसरण करें ? [रिक्त स्थानों में ''एक'' भरें।] यीशु चाहता है कि जैसे वह और पिता *एक* हैं वैसे ही उसके मानने वाले भी एक हों।

2. पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया को यीशु की इच्छानुसार जीवन बिताने के लिए लिखा। उनमें कोई आपसी झगड़ा था। पौलुस ने उन्हें ज़्या करने के लिए कहा? [1 कुरिन्थियों 1:10 पढ़ें।] उन्हें *ज़्या* करना था [रिक्त स्थान में ''एक'' और ''फूट'' भरें। सिखाने वाले को चाहिए कि बाइबल के कुछ अनुवादों में शब्दों में अन्तर होने के कारण, अध्ययन शीट के शब्दों में थोड़ा सा अन्तर कर लें।] उनमें पाई जाने वाली फूट स्वीकार्य नहीं थी और उसमें सुधार की आवश्यकता थी।

3. पौलुस ने फिलिप्पी में रहने वाले भाइयों को ज़्या निर्देश दिया [फिलिप्पियों 1:27 पढ़ें।] वह उनसे विश्वास के लिए परिश्रम करते हुए *कैसा* व्यवहार चाहता था? [रिक्त स्थान में ''एक'' और ''एक चित'' भरें।] विश्वास कितने हैं ? केवल *एक* ही विश्वास है (इफिसियों 4:5)।

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है ? हमने सीखा है कि यीशु के अनुयायियों अर्थात उसकी कलीसिया को एक होकर रहना चाहिए। उन्हें एक साथ रहकर एक चित से, बिना फूट के और एक दूसरे के प्रति बिना किसी दुर्भावना के मिलकर काम करना चाहिए।

यदि यीशु ने केवल एक ही कलीसिया बनाई और कलीसिया पर सिर होने के कारण वह अपनी देह के विश्वासियों में एकता चाहता है, तो फिर इतनी कलीसियाएं ज़्यों हैं ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे बहुत से लोग पूछते हैं। इसका उज़र इतना आसान नहीं है, परन्तु बाइबल इस बात का संकेत अवश्य देती है कि ऐसा होगा।

ध्यान दें कि पौलुस प्रेरित ने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को ज़्या बताया। [प्रेरितों 20:17, 28-31 पढ़ें।] कलीसिया का ज़्या होने वाला था ? ज़्या लोगों ने उल्टी शिक्षा सिखाकर अपने पीछे लोगों को नहीं लगा लेना था ? [*पिछली ओर* वर्ग से जो कलीसिया को दर्शाता है छोटे वर्ग अर्थात संसार की ओर एक तीर खींचे। तीर में ''चेले'' और नये वर्ग के ऊपर, इसके पास ''नीचे,'' और इसमें ''मनुष्य'' लिखें। देखें पृष्ठ 146।]

ध्यान दें कि इन्सान द्वारा आरज़्भ की गई कलीसियाओं पर सिर *इन्सान* ही है और उन्हें *मनुष्यों* की शिक्षाओं के आधार पर ही बनाया गया है। ये कलीसियाएं यीशु की बनाई कलीसिया अर्थात उसकी कलीसिया का जिसका सिर, नींव और उद्धारकर्ज़ा यीशु है, से मुकाबला करती हैं।

यीशु अपनी कलीसिया के लिए मरा और अपनी ही कलीसिया का उद्धारकर्ज़ा है। मनुष्य द्वारा आरज़्भ की गई कलीसियाओं के लिए कौन मरा था और इन कलीसियाओं का

उद्धारकर्ज़ा कौन है ? मनुष्यों की कलीसियाओं को बनाने वाला, नींव और सिर ही गलत हैं। इस प्रकार वे यीशु की बनाई कलीसिया से अलग हैं। ज़्या उनका उद्धारकर्ज़ा मसीह की कलीसिया के उद्धारकर्ज़ा के समान हो सकता है ?

सब लोगों को चाहिए कि वे संसार को छोड़कर मनुष्यों द्वारा आरज़्भ की गई कलीसिया को छोड़कर अर्थात उस कलीसिया में जो यीशु ने बनाई है, एक हो जाएं। यही सुरक्षित ढंग है। मनुष्य अपनी बनाई कलीसियाओं का उद्धार नहीं कर सकता, परन्तु यीशु अपनी कलीसिया का उद्धार कर सकता है। ज़्या आप मसीह की कलीसिया के सदस्य हैं ? यदि आप इसके सदस्य नहीं हैं तो अभी इसके सदस्य बनकर प्रभु को अपना उद्धारकर्ज़ा मान ज़्यों नहीं लेते ?

VIII. कलीसिया का भविष्य

यीशु के प्रेम ने उसे कलीसिया के लिए मरने को प्रेरित किया (इफिसियों 5:25)। परन्तु यीशु को अपने आपको इस प्रकार से देने की ज़्या आवश्यकता थी। पौलुस प्रेरित ने इसके दो कारण बताए हैं। [इफिसियों 5:26, 27 पढ़ें।] इनमें से पहला कारण इफिसियों 5:26 में मिलता है। यीशु ने अपने आपको इसलिए दिया ताकि वह कलीसिया को *ज़्या* कर सके ? [रिज़्त स्थानों में ''शुद्ध'' और ''पवित्र बनाए'' भरें।]

''पवित्र बनाए'' शज़्द आज अधिक प्रचलन में नहीं है। इसका ज़्या अर्थ है ? इसका अर्थ किसी विशेष उद्देश्य के लिए अलग करना है। कपड़े का एक टुकड़ा कई तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है: इससे फ़र्श साफ़ किया जा सकता है, नाक साफ की जा सकती है, बर्तन साफ किए जा सकते हैं आदि। यदि कपड़े के एक टुकड़े पर किसी देश का झंडा छपा हो, तो इसे सामान्य उद्देश्यों से अलग करके *केवल* झंडे की तरह इस्तेमाल किया जाएगा। यीशु अपनी कलीसिया को ''पवित्र बनाने'' अर्थात दुष्ट संसार से अपने लोगों को अलग करने के लिए मरा ताकि इससे उसके स्वर्गीय उद्देश्य पूरे हों।

वह कलीसिया को ''शुद्ध करने'' के लिए भी मरा। स्वर्ग में किसी तरह की अशुद्ध, मिलावटी, या अपवित्र वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती (प्रकाशित. 21:27)। यीशु कलीसिया को *केवल* शुद्ध करने के लिए ही नहीं, बल्कि इसे स्वर्ग में ले जाने के लिए शुद्ध और बेदाग बनाने के लिए मरा। वह एक देह *मसीह में* होती है जहां इसे यीशु के लहू (रोमियों 12:5; इफिसियों 1:7), अर्थात उस लहू के द्वारा जिससे कलीसिया को खरीदा गया (प्रेरितों 20:28) शुद्ध किया जाता है।

यह भी ध्यान दें कि यीशु ने अपने आपको इसलिए दिया ताकि वह वचन के द्वारा जल के स्नान से कलीसिया को शुद्ध कर सके। हमारे पापों को शुद्ध करने की सामर्थ न तो *पानी* में है और न ही *वचन* में। यीशु ने अपने आपको इसलिए दिया ताकि वह वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करे।

यदि आपके बैंक खाते में कोई पैसा न हो तो चैक का कोई महत्व नहीं होता। चैक का महत्व खाते में पैसे होने पर ही होता है। इसी प्रकार, यीशु का लहू ही है जो *जल* और वचन

से शुद्ध होना सम्भव बनाता है। वचन ज़रूरी है ताकि लोग सुन और सीखकर यीशु में विश्वास ला सकें (यूहन्ना 17:20; प्रेरितों 17:11, 12), मन फिरा सकें, यीशु में विश्वास का अंगीकार कर सकें और बपतिस्मा ले सकें। *जल* के बिना *वचन* हमें शुद्ध नहीं करेगा और *वचन* के बिना *जल* हमें शुद्ध नहीं करेगा। *जल* और *वचन* दोनों ही जरूरी हैं। ध्यान दें कि शाऊल को कैसे उठकर बपतिस्मा लेकर अपने पाप धो डालने के लिए कहा गया था (प्रेरितों 22:16)। यीशु ने अपने आपको दे दिया ताकि वह वचन को मानने वालों (प्रेरितों 2:41) और पानी में बपतिस्मा लेने वालों को शुद्ध करे।

यीशु के अपने आपको देने का दूसरा उद्देश्य इफिसियों 5:27 में मिलता है। उसने अपने आपको इसलिए दिया ताकि वह कलीसिया को अपने लिए बिना किसी दाग, अशुद्धता के अर्थात पवित्र और निष्कलंक कलीसिया बनाए।

नगर की बस्ती से गुज़रते हुए एक धनवान व्यक्ति सुन्दर स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो सकता है। उसके बारे में पता लगाकर, यदि वह उसे अपनी मां से मिलवाने की इच्छा करता है ताकि विवाह के लिए मां अपनी स्वीकृति दे दे, तो उस आदमी को लग सकता है कि उसकी मां को वह स्त्री स्वीकार्य नहीं होगी। वह अपनी मां के सामने अच्छा दिखाने के लिए उसे अच्छे, साफ और सुन्दर कपड़े पहनाकर तैयार करेगा। तभी वह उसे अपनी मां के पास ले जाएगा।

इसी प्रकार से पाप की अपनी स्थिति में, पिता के घर में हमें जगह नहीं मिलनी थी। यीशु ने कलीसिया को शुद्ध करके इसे अपना आप पहना दिया है (गलतियों 3:27) ताकि वह इसे एक पवित्र कुंवारी के रूप में अपने लिए पेश कर सके (2 कुरिन्थियों 11:2)। ज़्या आप मसीह की कलीसिया में हैं? आपको मसीह की कलीसिया के सदस्य ज़्यों होना चाहिए? मसीह की कलीसिया का भविष्य ज़्या है?

आप मसीह की कलीसिया में कैसे आ सकते हैं? ज़्या आपने वचन को सुना है, यीशु में विश्वास लाए हैं, अपने पापों से मन फिराया है, यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार किया और बपतिस्मा ले लिया है? यीशु की इच्छा पूरी करने में आपमें ज़्या कमी है। अभी आप उसकी बात ज़्यों नहीं मान लेते?

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है? हमने सीखा कि कलीसिया के लिए यीशु के प्रेम ने उसे अपनी मृत्यु के द्वारा कलीसिया को पवित्र और शुद्ध करने की प्रेरणा दी ताकि वह उसे अपने लिए बेदाग और निष्कलंक कलीसिया बना सके।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने यीशु के लोगों अर्थात कलीसिया के बारे में अध्ययन किया है।

I. *मसीह की कलीसिया किन लोगों से बनती है?* कलीसिया अर्थात मसीह की देह उन पुरुषों व स्त्रियों से बनती है जो उसके अनुयायी, उसके चेले हैं अर्थात जिन्हें मसीही कहा जाता है।

II. *कितनी देहें हैं?* देह केवल एक ही है।

III. *यह किसकी कलीसिया (देह) है ?* मसीही लोगों की देह यीशु की ही है।

IV. *मसीह कलीसिया का ज़्या है ?* मसीह इसका बनाने वाला, नींव, सिर और उद्धारकर्ज़ा है।

V. *मसीह ने कलीसिया के लिए ज़्या किया है ?* यीशु ने अपने लहू से कलीसिया को खरीदने के लिए अपने आपको दे दिया।

VI. *कलीसिया मसीह के अधीन है।*

VII. *यीशु मसीह सदस्यों में कैसी एकता चाहता है ?* वह वही एकता चाहता है जो पिता के साथ उसकी है, ज़्योंकि उसने अपने अनुयायियों के लिए प्रार्थना की थी कि ''वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं।''

VIII. *यीशु ने कलीसिया के लिए अपने आपको दे दिया ताकि वह इसे वचन के द्वारा जल के स्नान से पवित्र और शुद्ध करे, ताकि इसे अपने लिए पेश कर सके।* इस पाठ में हमने सीखा है कि एक मसीही बनकर हम विश्वासियों से बनी यीशु की देह अर्थात उसकी कलीसिया के सदस्यों में से एक बन जाते हैं। यीशु की ऐसी केवल एक ही देह है, अर्थात वह देह जिसमें हमें बाइबल में सिखाया गया एक बपतिस्मा लेकर आते हैं। उसकी देह के एक अंग के रूप में, हम उस कलीसिया के सदस्य हैं जिसका वह बनाने वाला है, केवल वही उसकी नींव है और जिसका वह सिर और उद्धारकर्ज़ा है। यह वह कलीसिया है जिसका हम सबको मनुष्यों की कलीसियाओं के बजाय सदस्य होना ज़रूरी है। अपनी कलीसिया के लिए यीशु का प्रेम उसकी कष्टदायक मृत्यु में देखा जाता है ताकि वह कलीसिया को पवित्र और शुद्ध करके उसे अपने लिए बेदाग और निष्कलंक बना सके। वह अपने सभी अनुयायियों में एकता चाहता है।

ज़्या आप मसीह की कलीसिया के सदस्य हैं ? ज़्या आप जानते हैं कि आपको उसकी कलीसिया का सदस्य होना ज़्यों ज़रूरी है ? अभी, यीशु के अनुयायी अर्थात एक मसीही ज़्यों नहीं बन जाते ताकि आप विश्वासियों की उस देह के अंग बन जाएं जिसे यीशु अपने लिए पेश करेगा। ज़्या आप अभी मसीह के अनुयायी बनना चाहते हैं ?

[अगले अध्ययन के लिए अध्ययन का समय ठहरा लें।]